आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2388 • उदयपुर, गुरुवार 08 जुलाई, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्

सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

कोरोना की दूसरी लहर

घर–घर मदद पहुंचाने का लिया संकल्प

पूरा देश कोरोना महामारी की भयानक दूसरी लहर की चपेट में आते ही चारों तरफ हाहाकार मच गया। कोई ऑक्सीजन के लिए कतार में लगा तो कोई रमेडिसिविर इंजेक्शन की तलाश में निकला। हर कोई अपनों की जान बचाने के लिए मदद मांग रहा था। पूरा का पूरा परिवार कोरोना संक्रमित निकल रहा था, क्या बच्चे, क्या बूढ़े.... दवाई, भोजन और बेड के लिए लोग बेहाल हो रहे थे।

रूह कांपने वाली असहनीय स्थिति देखकर नारायण सेवा संस्थान ने कोरोना संक्रमितों के सेवार्थ अप्रैल से कोरोना रिलिफ सेवा मुहिम शुरू की। जिसमें घर–घर भोजन, दवाई, ऑक्सीजन एम्बुलेस और हाइड्रोलिक बेड आदि निःशुल्क रोगियों तक पहुँचाने का लक्ष्य रखा था।

संस्थान ने अपना हेल्पलाइन नम्बर जारी किया। देखते ही देखते अनेक मदद चाहने वालों को राहत मिलने लगी। संस्थान निरन्तर जुटी हुई विपदा की इस वेला में मदद करने वाले सहयोगियों का अथाह सहयोग मिल रहा है... हमें मानवता के पुजारियों पर गर्व है।

सेवा–जगत्

दिव्यांगों को समर्पित- आपका अपना नारायण सेवा संस्थान

संस्थान द्वारा भोपाल में कृत्रिम अंग वितरण शिविर

दिव्यांगजनों को कृत्रिम अंग लगे तो खुशी उनके चेहरों पर साफ दिखाई पड़ रही थी। 26 जून को भोपाल के मानस भवन में लगे कृत्रिम अंग वितरण समारोह के दूसरे दिन ऐसा ही दृश्य दिखाई दिया।

भोपाल उत्सव मेला समिति व नारायण सेवा संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस शिविर में मुख्य अतिथि श्री विश्वास जी सारंग (शिक्षामंत्री महोदय), अध्यक्ष श्री अशोक जी वली (समाजसेवी), विशिष्ट अतिथि श्री ओ.पी. बंसल जी, (विश्वास महासंघ अध्यक्ष) श्री कृष्णमोहन जी सोनी (पूर्व पार्षद) श्री रघुनंदन जी शर्मा (पूर्व सांसद महोदय एवं अध्यक्ष मानस भवन), श्री शलेन्द्र जी निगम (समाजसेवी), आदि उपस्थित थे।

शिविर प्रभारी अखिलेश जी अग्निहोत्री ने बताया कि 104 ओपीडी, 84 कृत्रिम व 20 कैलीपर्स वितरण किये गये। शिविर में भंवर सिंह जी, सुश्री रोली जी शर्मा, श्री नाथूसिंह जी, श्री भंवर सिंह जी, श्री सुनील जी, श्री लोगर जी, श्री फतेहलाल जी, श्री मुन्ना सिंह जी आदि की टीम का सहयोग रहा।

मेरठ और परभणी में भी घर–घर भोजन सेवा

भोजन पैकेट बनाने में जुटी सेवाभावी साधक टीम

कोरोना संक्रमित परिवारों के सेवार्थ नारायण सेवा संस्थान के मुख्यालय पर शुरू हुई घर–घर भोजन सेवा की तर्ज संस्थान की शाखा मेरठ (यू.पी.) और परभणी (महाराष्ट्र) में भी निःशुल्क भोजन सेवा अप्रैल माह से शुरू हुई है।

शाखा परभणी की संयोजिका मंजु जी दर्डा के नेतृत्व में 1800 से अधिक पैकेट तथा मेरठ में मूलशंकर जी मेनारिया के सहयोग से 900 से ज्यादा भोजन पैकेट वितरित किए जा चुके है।

अन्य शाखाओं में भी भोजन, राशन एवं दवाइयां आदि की निःशुल्क सेवा शुरू की जायेगी। यह सेवाएं कोरोना की दूसरी लहर की समाप्ति तक निरन्तर रहेगी पीड़ित मानवता को बचाना संस्थान का सर्वोपरि धर्म है।

धन्य भाग सेवा का अवसर पाया

नारायण सेवा संस्थान को दिव्यांगों को समर्थ बनाये के लिये जो वरदान मिला है। दिव्यांग प्रभु की सेवा के अवसर नित्य सृजित हो रहे है। ऐसे ही तीन और अवसर मिले।

नाम – रानु, ,आयु –18 वर्ष, पिता– श्री हीरालाल शर्मा निवासी–किशनगढ़, अजमेर, 3 वर्ष की उम्र में चलते समय अचानक घुटना पीछे चले जाने से रानु विगत 15 वर्षों से बहुत मुश्किल से चल पाती थी। टी.वी. चैनल्स पर संस्थान का कार्यक्रम देखकर संस्थान पहुंचे। 16 अगस्त को पैर का ऑपरेशन हुआ। रानु कहती है कि –"अब मैं पैर में स्फूर्ति महसूस कर रही हूं और केलिपर्स की सहायता से चलना सम्भव हो गया है।

संस्थान ने मुझे नया जीवन दिया हे। यहां पर किसी भी तरह की तकलीफ नही हुई है, सभी सुविधाएं निःशुल्क मिली हैं।"

नाम– प्रियंका, उम्र– 15 वर्ष,
पिता– श्री धर्मेन्द्र कुमार वर्मा
गांव– बलसरा, झारखण्ड

जन्म के 6 महीने बाद ही पोलियोग्रस्त हो गई। चारों हाथ–पैरों से चलती थी। टी.वी. पर संस्थान में दिव्यांगों के सफल ऑपरेशन की जानकारी प्राप्त कर श्री धर्मेन्द्र कुमार जी, प्रियंका को लेकर संस्थान में आये। ऑपरेशन की तारीख मिलने पर वे प्रियंका को लेकर पुनः संस्थान में आये, प्रियंका के 4 सफल ऑपरेशन सम्पन्न हुए। अब प्रियंका दिव्यांगता से मुक्त होकर केलिपर्स के सहारे चलने फिरने में सक्षम होकर प्रसन्न है।

श्री धर्मेन्द्र कहते हैं –"मेरे जैसे गरीब की यह खुशनसीबी है कि ऑपरेशन, दवाइयों का खर्च, रहना, खाना सभी कुछ निःशुल्क मिला और –मेरे घर से भी अच्छा आराम यहां मिला है।"

नाम– घनश्याम टावरी (21 वर्ष)
पिता– देवी लाल जी टावरी

शहर– पिपलगाँव, बुलढ़ाना (महाराष्ट्र)

जन्म के छः माह बाद बुखार में घनश्याम का पांव पोलियाग्रस्त हो गया। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होते हुए भी महाराष्ट्र एवं आन्ध्रप्रदेश सहित कई स्थानों पर इलाज के लिए दिखाया, लेकिन सब कोशिशें बेकार रही। टी.वी. पर संस्थान का कार्यक्रम देखकर घनश्याम अपने बड़े भाई के साथ संस्थान पहुंचा। संस्थान के चिकित्सकों द्वारा घनश्याम के पांव की जांच की गई, जब घनश्याम के पांव का सफल ऑपरेशन हुआ। घनश्याम की आंखों में खुशी के आंसू छलक पड़े जब वह कैलिपर पहन कर अपने पावों पर चलने लगा।

ऐसे एक–दो नहीं, लाखों से अधिक दिव्यांगों को अपने पावों पर खड़ा किया है संस्थान ने। यह सब आपके आर्थिक सहयोग से ही संभव हो पाया है।

सेवा संजीवनी – अतीत की याद

उदयपुर से 130 किमी दूर पानरवा के एक केम्प की बात भूलाये नहीं भूलती। अति वृद्ध एवं बहुत गरीब सी दिखने वाली एक माई को जब जर्सी देने लगे तो उसने अपनी छोटी–सी गांठ को कस कर दबा लिया। हमने कहा "माँजी यह गांठ नीचे रख दीजिये, ताकि आराम से आप कपड़ा ले सके।" माँजी के गांठ और कस कर दबाई। हमारे आश्चर्य का समाधान करते हुए एक सज्जन ने बताया, इसकी कुल जमा पूँजी इसी गांठ में बंद है। यहां से तीस किमी दूर नदी के किनारे रहती हे, झौंपड़ा भी नहीं है। हाय–हाय यह मांजी मात्र एक कपड़ा लेने के लिये 30 किमी दूर पैदल चलकर आयी है?

शुरू–शुरू में ये वनवासी बंधु सभी को शंका की दृष्टि से देखते है इनको लगता है कि लोग आते हैं, भाषण आदि करके चले जाते हैं। जब इनको यह विश्वास होता है कि ये वास्तव में हमारे शुभचिंतक है तो बात को ध्यान से सुनते हैं और मानते हैं। संस्थान का 81वां शिविर 25.6.89 को इसवाल में आयोजित हुआ। वहां एकत्रित हुए आस–पास के क्षेत्रों से 2000 से अधिक बंधु–बांधव माताएं बहने व बच्चे। चिकित्सा के लिए गये डॉ. एन.एम. दुग्गड़ एवं डॉ. महेश दशौरा ने 206 बीमारों की चिकित्सा जांच कर लगभग 2100 रु. की दवाइयां प्रदान की। मेडिकल प्रकल्प हेतु मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी का सौजन्य रहा। .....वनवासियों ने जीवन भर के लिए शराब व मांस का परित्याग किया। हर बार की तरह इन बन्धुओं को शिक्षा, स्वच्छता आदि के विभिन्न पहलुओं की तरफ कई उदाहरणों से बताया। इनके रीतिरिवाज, इनकी उन्मुक्त, हंसी, सन्तोष की गहरी भावना हम शहरवासियों को भी बहुत कुछ सिखा देती है।

रामचरित मानस में एक अर्धाली आती है "गिरा अनयन नयन बिनु बानी" जीभ के आँखें नहीं कि वह देख सके, और हमारे ये चक्षु, इनके जीभ नहीं कि ये कह सके। कई मीठे अनुभव, हृदय को अन्दर से छू जाने वाली कई बातें ऐसी हो जाती है कि बार–बार कृपानिधान की कृपा का आभास होता है।

विश्वास फलीभूत हुआ

जयपुर निवासी श्री बिट्टू आयु 12 वर्ष सुपुत्री श्री ताराचन्द्र जन्म से एक महीने बाद पोलियो की वजह से दिव्यांगता का शिकार हो गई।

श्री बिट्टू के पिता एक व्यापारी हैं। इन्होंने कई जगह हॉस्पीटल में अपनी पुत्री का इलाज करवाया पर कोई आशाजनक परिणाम नहीं मिलें। श्री ताराचन्द्र बताते हैं कि टी.वी. के माध्यम से नारायण सेवा संस्थान के बारे में जानकारी मिली। इससे हमारी एक आशा जगी, और हमने उदयपुर में संस्थान के डॉक्टर्स को दिखायां जाँच के बाद डॉक्टर्स ने हमें ऑपरेशन के लिए बुलाया है। संस्थान में दिव्यांगों की सफल चिकित्सा देख कर श्री ताराचन्द्र को पूरा विश्वास हो गया।

अंतहीन संभावनायें – दिव्यांगता मिटाने के लिये विभिन्नआयाम

WORLD OF HUMANITY का निर्माण प्रगति पर.....

अंतहीन संभावनाएं - दिव्यांगता मिटाने के विभिन्न आयाम

चिकित्सा
- निदान (एक्स रे, ओपीडी, लैब)
- उपचार (कृत्रिम अंग और कैलीपर्स)
- पोस्ट ऑपरेटिव केयर (वार्ड, आईसीयू)
- चिकित्सा सहायता (फार्मेसी एवं फिजियोथेरेपी)

स्वावलम्बन
- हस्तकला या शिल्पकला
- सिलाई प्रशिक्षण
- डिजिटल (कंप्यूटर) प्रशिक्षण
- मोबाइल फोन मरम्मत प्रशिक्षण
- नारायण चिल्ड्रन एकेडमी (निःशुल्क डिजीटल स्कूल)

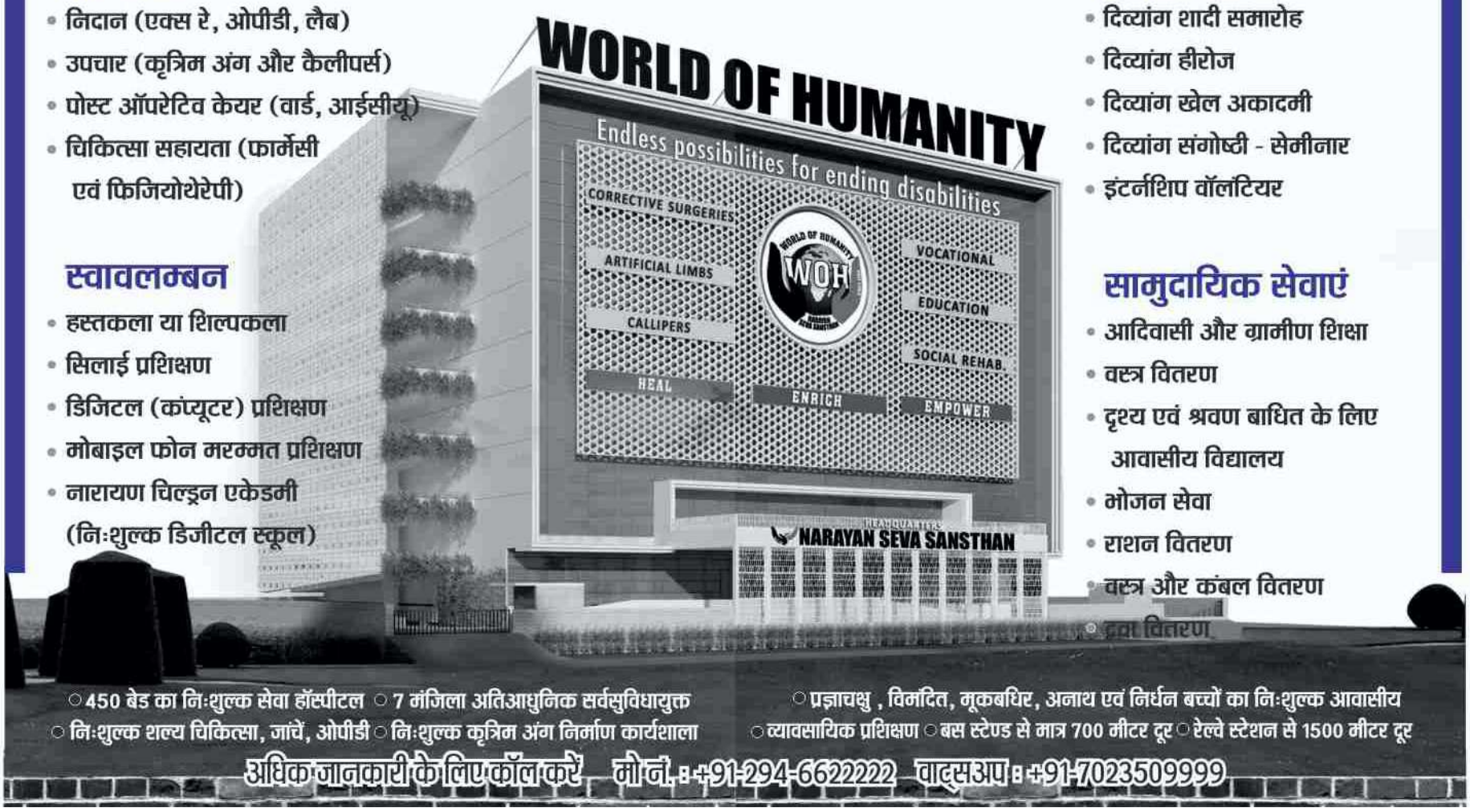

सशक्तिकरण
- दिव्यांग शादी समारोह
- दिव्यांग हीरोज
- दिव्यांग खेल अकादमी
- दिव्यांग संगोष्ठी - सेमीनार
- इंटर्नशिप वॉलंटियर

सामुदायिक सेवाएं
- आदिवासी और ग्रामीण शिक्षा
- वस्त्र वितरण
- दृश्य एवं श्रवण बाधित के लिए आवासीय विद्यालय
- भोजन सेवा
- राशन वितरण
- वस्त्र और कंबल वितरण
- दवा वितरण

○ 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल ○ 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त
○ निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी ○ निःशुल्क कृत्रिम अंग निर्माण कार्यशाला
○ प्रज्ञाचक्षु , विमदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों का निःशुल्क आवासीय
○ व्यावसायिक प्रशिक्षण ○ बस स्टेण्ड से मात्र 700 मीटर दूर ○ रेल्वे स्टेशन से 1500 मीटर दूर

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें मो नं.: +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

सम्पादकीय

जीवन में व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से अनेक संसाधनों की उपलब्धता का सुख पा लेता है। ये संसाधन स्थूल भी हो सकते हैं और सूक्ष्म भी। ये संसाधन जब तक पवित्र हैं तभी तक संसाधन हैं वरना तो हितसाधन हैं। संसाधन बहुमूल्य हों या अत्यधिक परिश्रम से प्राप्त किन्तु उनकी सार्थकता तभी है जब वे सेवा में भी उपयोगी बनें। एक ऐसी स्थिति आती है कि व्यक्ति अपने उपयोग के बाद वह उन संसाधनों का उपयोग परहित में करता है। यह एक अनुकरणीय व प्रशंसनीय वृत्ति है। एक ऐसी स्थिति होती है कि व्यक्ति संसाधनों को अपने उपयोग में न लेकर परार्थ में ही लगा देता है, यह श्रेष्ठतम स्थिति है। पर संतोष दोनों परिस्थितियों में होता ही है। अतः संसाधन के बजाय उनके उपयोग की भावना का प्रकाश प्रमुख है। क्योंकि संसाधन तो एक सीमा तक हैं फिर वे अदृश्य हो जाते हैं, कभी–कभी अप्रासंगिक भी। वे नश्वर हैं पर उनसे जो सेवा हो सकी है वह अमर है। आइए मानवता से अमरता की यात्रा करें।

कुछ काव्यमय

सेवा, सेवक, सेव्य जब,
हो जाते इकसार।
समझो लगता बरसने,
नारायण का प्यार।।
संस्कारों के खेप में,
भावों की दें खाद।
सेवा–बीज वपन करें,
पूरी होय मुराद।।
यदि सेवा की बाति हो,
दीपे भाव–प्रकाश।
ऐसे वातावरण से,
पुलके भूमि–अकाश।।
मन में हो जब कामना,
सुखी बने संसार।
सेवा–पथ आनंदप्रद,
बन जाता हर बार।।
सेवा का पल–पल सधे,
पावन यज्ञ विधान।
क्योंकि सेवित में बसे,
स्वयं पूज्य भगवान।।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

अपनों से अपनी बात

विवेक का फैसला

सफलता का श्रेय किसे मिले इस प्रश्न पर एक दिन विवाद उठ खड़ा हुआ। 'सकल्प' ने अपने को, 'बल' ने अपने को दोनों अधिक महत्वपूर्ण बताया। दोनों अपनी–अपनी बात पर अड़े हुए थे। अन्त में तय हुआ कि 'विवेक' को पंच बना इस झगड़े का फैसला कराया जाय।

दोनों को साथ लेकर 'विवेक' चल पड़ा। उसने एक हाथ में लोहे की टेढ़ी कील ली और दूसरे में हथौड़ा। चलते–चलते वे लोग ऐसे स्थान पर पहुँचे, जहाँ एक सुन्दर बालक खेल रहा था। विवेक ने बालक से कहा कि –'बेटा, इस टेढ़ी कील को अगर तुम हथौड़े से ठीक कर सीधी कर दो तो मैं तुमको भर पेट मिठाई खिलाऊँगा और खिलौने से भरी एक टोकरी भी दूँगा।'

बालक की आँखें चमक उठी। वह

बड़ी आशा और उत्साह से प्रयत्न करने लगा, पर कील को सीधा कर सकना तो दूर उससे हथौड़ा उठा तक नहीं। भारी औजार उठाने के लायक उसके हाथों में बल नहीं था। बहुत प्रयत्न करने पर सफलता नहीं मिली तो बालक खिन्न होकर चला गया। इससे उन लोगों ने यह निष्कर्ष निकाला कि सफलता प्राप्त करने के लिए केवल 'संकल्प' ही काफी नहीं है। चारों आगे बढ़े तो थोड़ी दूर जाने पर एक श्रमिक दिखाई दिया।

वह खर्राटे लेता सो रहा था। विवेक ने उसे झकझोरकर जगाया ओर कहा कि "इस कील को हथौड़ा मारकर सीधा कर दो, मैं तुम्हें दस रुपया दूँगा। उनींदी आँखों से श्रमिक ने कुछ प्रयत्न भी किया, पर वह नींद की खुमारी में बना रहा। उसने हथौड़ा एक ओर रख दिया और वहीं लेटकर फिर खर्राटे भरने लगा।

निष्कर्ष निकला कि अकेला 'बल' भी काफी नहीं है। सामर्थ्य रखते हुए भी संकल्प न होने से श्रमिक जब कील को सीधा न कर सका तो इसके सिवाय और क्या कहा जा सकता था?

विवेक ने कहा कि हमें लौट चलना चाहिये, क्योंकि जिस बात को हम जानना चाहते थे वह मालूम पड़ गई। एकाकी रूप में आप लोग तीनों अधूरे–अपूर्ण हैं।"

– कैलाश 'मानव'

मोक्ष का मार्ग

जीवन में अनेक बार ऐसी परिस्थितियाँ पैदा हो जाती हैं, जो व्यक्ति के समक्ष उलझनें पैदा कर देती हैं। जहाँ एक ही समस्या के लिए दो हल और दोनों ही एक–दूसरे के विरुद्ध होते हैं, सही साबित होते हैं। लेकिन दोनों ही हलों की उपयुक्तता व्यक्ति, समय, स्थान और परिस्थिति पर निर्भर करती है।

एक जिज्ञासु व्यक्ति एक संत के पास गया और पूछा–हे महात्मन् ! क्या गृहस्थ जीवन में रहकर भी मोक्ष प्राप्ति की जा सकती है?

संत ने उत्तर दिया – हाँ, निश्चित रूप से गृहस्थ जीवन में रहकर भी मोक्ष पाया जा सकता है। महाराज जनक के पास बहुत वैभव था, लेकिन फिर भी उन्होंने मोक्ष पाया।

वह व्यक्ति संत द्वारा दिए गए उत्तर से संतुष्ट होकर वहाँ से चला गया। उसके जाने के पश्चात् वहाँ एक दूसरा जिज्ञासु व्यक्ति आया और उसने संत से पूछा –क्या गृहस्थ जीवन त्याग और वन में जाकर तपस्या करके मोक्ष पाया जा सकता है?

संत ने उत्तर दिया –हाँ, गृहस्थ जीवन को त्यागने के पश्चात् वन में जाकर तपस्या करके मोक्ष पाया जा सकता है।

जिज्ञासु ने पूछा –कैसे? तब संत ने बताया कि दुनिया में भक्त ध्रुव तथा महात्मा बुद्ध जैसे बहुत से ऐसे सिद्ध पुरुष हुए हैं, जो यदि वन में नहीं जाते तो उन्हें मोक्ष प्राप्त नहीं होता। एक शिष्य जो संत की बातों को सुन रहा था, उसे दूसरे जिज्ञासु के जाने के पश्चात् बहुत आश्चर्य हुआ और उसने कौतुहलवश संत से पूछा–गुरुदेव, आपने एक ही प्रश्न के भिन्न–भिन्न उत्तर और वो भी एक–दूसरे के विरोधाभासी, कैसे दिये? संत ने समझाया–पहला जो व्यक्ति आया था, वह गृहस्थ जीवन में रहकर भी मोक्ष पाने की साधना कर सकता था, इसीलिए मैंने उसे बताया कि राजा जनक ने जैसे वैभव में रहकर भी मोक्ष प्राप्त किया, ठीक वैसे ही गृहस्थ जीवन में रहकर मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है, क्योंकि उस जिज्ञासु में गृहस्थ रहकर भी मोक्ष पाने की साधना करने की क्षमता थी, लेकिन दूसरा जिज्ञासु जो आया वह गृहस्थ जीवन बसाकर मोक्ष प्राप्ति की साधना नहीं कर सकता था, इसीलिए मैंने उसे महात्मा बुद्ध वाला उदाहरण दिया।

इस प्रकार एक ही प्रश्न के दो विरोधाभासी उत्तर हो सकते हैं, लेकिन यह निर्भर करता है देश–काल–परिस्थिति और व्यक्ति पर। कभी–कभी एक बड़ा झूठ सौ सच से बड़ा हो जाता है तो कभी–कभी एक बड़ा सच सौ झूठ से भी बड़ा हो जाता है। कई बार प्रेम करना गुनाह हो जाता है तो कई बार क्रोध करना भी आवश्यक हो जाता है। कई बार धर्म करना अधर्म हो जाता है और कई बार अधर्म करना भी धर्म हो जाता है। ये समस्त बातें व्यक्ति विशेष और देश– काल– परिस्थिति पर निर्भर करती हैं।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश की बात सुनकर सभी को अपनी गलती का एहसास हुआ। अब वे शर्मिन्दा होकर कहने लगे कि हमें खून देते हुए डर लगता है इसी कारण हम मना कर रहे हैं, आप कोशिश करके कहीं से भी खून जुटा लें। अब तक जो अहंकार से अपने पैसों का मद बता रहे थे, वही अब घिघियाते–मिमियाते हुए विनती करने लगे तो कैलाश को लगा कि तीर निशाने पर बैठा है, उसे यह भी पता चल गया कि इन्होंने कभी खून दिया नहीं है इसीलिये डर रहे हैं। कैलाश ने अब दूसरा तरीका अपनाया। गुस्सा छोड़ समझाईश की भाषा अपनाते हुए उसने बताया कि आपको पता भी नहीं चलेगा कि आपका खून कब और कैसे निकाला गया। आपने कभी खून दिया नहीं है इसलिये डर रहे हो। सोचो अगर आपने खून नहीं दिया और पिताजी को कुछ हो गया तो जिन्दगी भर आप अपनी इस गलती पर पछताते रहोगे। कैलाश की बातों का असर यह हुआ कि दोनों खून देने को तैयार हो गये। उन्होंने अपनी गाड़ी वापस मोड़ी और अस्पताल पहुँचे।

डाक्टर इनके हृदय परिवर्तन से बहुत खुश हुआ। उसने कैलाश को धन्यवाद दिया और इस बात पर बल दिया कि लोगों को खून देने के बारे में शिक्षित और प्रोत्साहित करने की बहुत जरूरत है। डाक्टर की बात से कैलाश के मन के कोने में भी भविष्य में इस तरह का किसी कार्यक्रम हाथ में लेने की योजना बनने लगी। दोनों जमाइयों ने खून दे दिया तो बहुत प्रसन्न हो गये। वे अब कहने लगे कि हम व्यर्थ में ही डर रहे थे। उन्होंने कैलाश का बहुत आभार माना और कहा कि अगर आप हमारी आंखें नहीं खोलते तो शायद हम पिताजी को खो देते। खून देना इतना आसान है यह तो हमें पता भी नहीं था, भविश्य में अब कभी भी, किसी को भी खून देने में आना कानी नहीं करेंगे। कैलाश को अपने परिश्रम का ऐसा फल देख कर खुशी हुई। कैलाश घर लौटा और अपना अनुभव कमला को बताया तो वह भी खुशी हुई।

अंश - 55

सेहत के लिये आजमाइये

1. अरुचि के लिये मुनक्का हरड़ और चीनी–
भूख न लगती हो तो बराबर मात्रा में मुनक्का (बीज निकाल दें), हरड़ और चीनी को पीसकर चटनी बना लें। इसे पाँच छह ग्राम की मात्रा में (एक छोटा चम्मच), थोड़ा शहद मिला कर खाने से पहले दिन में दो बार चाटें।

2. बदन के दर्द में कपूर और सरसों का तेल–
10 ग्राम कपूर, 200 ग्राम सरसों का तेल– दोनों को शीशी में भरकर मजबूत ढक्कन लगा दें तथा शीशी धूप में रख दें। जब दोनों वस्तुएँ मिलकर एक रस होकर घुल जाएं तब इस तेल की मालिश से नसों का दर्द, पीठ और कमर का दर्द और, माँसपेशियों के दर्द शीघ्र ही ठीक हो जाते हैं।

3. जोड़ों के दर्द के लिये बथुए का रस–
बथुआ के ताजा पत्तों का रस पन्द्रह ग्राम प्रतिदिन पीने से गठिया दूर होता है। इस रस में नमक–चीनी आदि कुछ न मिलाएँ। नित्य प्रातः खाली पेट लें या फिर शाम चार बजे। इसके लेने के आगे पीछे दो–दो घंटे कुछ न लें। दो तीन माह तक लें।

4. पेट में वायु–गैस के लिये मट्ठा और अजवायन –
पेट में वायु बनने की अवस्था में भोजन के बाद 125 ग्राम दही के मट्ठे में दो ग्राम अजवायन और आधा ग्राम काला नमक मिलाकर खाने से वायु–गैस मिटती है। एक से दो सप्ताह तक आवश्यकतानुसार दिन के भोजन के पश्चात लें।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

मनोरमा जी पारीक, नर्बदा जी गुप्ता, श्रीमति लालचंदजी जैन साहब, खुद लालचंद जी, अनिल गुप्ता जी। अबतो दिन का भोजन कराने के बाद आप तुरन्त चले जाना उदयपुर, अपने 22 पी. एन.टी कॉलोनी में भोजन कराऐंगे। हाँ, जरूर जरूर। अलसीगढ़ गये बैलगाड़ी वहाँ, अलसीगढ़ के मोड़ पे, वहाँ तक तो गाड़ी में गये। करीबन 16 कार, जीप, बसे 150 महानुभाव, कार्यकर्त्ता। वहाँ ढोल–बाजे बज रहे हैं, और मफतकाका साहब को बैलगाड़ी पे बिठाया उस मोड़ पे। पहली बार जीवन में बैलगाड़ी में बैठे मफत काका, बोले– वाह! वाह! कैलाशजी कितनी अच्छी व्यवस्था करते हो। महाराज भगवान करते हैं, परमात्मा करते हैं, भीण्डेश्वर महादेव करते हैं, रघुनाथजी महाराज करते हैं। हमारे आदरणीय पूज्य बापूजी अन्तरिक्ष में बिराजेहुए वो हमें आशीर्वाद देते हुए वो व्यवस्था करते हैं। मैं क्या? कैलाश क्या? साढ़े तीन हाथ की काया, दो सौ छः हड्डियाँ, पांच सो उन्नीयासी मांस पेशियाँ, हाँ, ये लीवर, ये किडनी दोनों। ये अग्नाशय, ये गॉल ब्लेडर ये तो सभी के होते हैं। दोनों आँतें भी सभी की, ये अस्थितंत्र क्या, धरा है इनमें? देह देवालय के अन्दर जाऐंगे तो हड्डियाँ नजर आयेगी, माँशपेशियाँ, लहु लाल लाल। हाँ, लालरंग का। भगवान ने विशेष कार्य के लिये सब को भेजा है।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 182 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023